REVELATION OF THE GITA GOD SHIVA

Finally, the **Universal Light, The God Father** has come at the end of the present ignorance dark night of **Kaliyuga - the iron aged era** for putting an end to this *sorrowful, vicious, corrupted and violent world* and creating a **new Golden aged era** referred as **Ramrajya, Satyuga, Paradise, Heaven or Swarg, Jannat, Bahist etc** in scriptures & religious text so that the earth regains its original strength and purity and become a beautiful place to live in. Since **God is one** he creates ONE RELIGION and ONE WORLD FAMILY.

He is the same Incorporeal God whose verses are expressed in holy scripture **Shrimad Bhagvad Gita** that I reincarnate in Bharat (India) through an ordinary chariot (body) of a human being when the irreligiousness and unrighteousness is at it's peak in the world and create a new religo-politicial righteous world order based on one religion by teaching an ancient science of Rajyoga and Godly (Spiritual knowledge) in order to begin a new cycle. In present scenario all sorts of *chaos, sorrows, corruption and sinful actions* can be witnessed and experienced which prove that the world is at its peak as described.

To make this **godly task of world transformation** into a **reality**, firstly we the souls - the imperishable actors and the children of the supreme soul 1) must recognize our God Father- the creator of paradise /swarg / heaven/ jannant and known as Shiva**/ Allah/Khuda/Jehovah/Omkar/infinite names** in various religions/spiritual cults who himself reveals his true identity at the end of the world cycle 2) follow his shrimat (dictates) for cleansing or purifying our soulsanddiscarding off our devilish traits encompassing vices & destructive instinct that has turned us down from the deity status and this beautiful planet from heaven into hell. He is the ONE CREATOR God and rest all are his creation including us (souls). But we have a spiritual eternal relation of father and children.

Now **God father says:** Recognize yourself as a soul – the conscious point of light and remember me your supreme soul father who is also the conscious point light form like you, shed off your bodily identifications and relationsin order to destroy your sins and have your God fatherly birthright of heavenly Kingdom before making your way back to your real abode (soul world) with me.

At present we are now at the peak moment of this world transformation and little final moment left for self-transformation and claiming the birthright of purity, peace and happiness in the coming heavenly world from the God father. **Chance once missed will be a great miss forever**…. **Now or never. Awake Awake … before it is too late**… and thereafter DO NOT COMPLAIN that **GOD – THE BESTOWER OF FORTUNE HAD COME TO MAKE DESTINY AND WE WERE NOT AT ALL AWARE OF THE MESSAGE .**

With hearty offering to God father

On God Fatherly service

गीता के भगवान शिव की प्रत्यक्षता

आखिर इस कलियुगी लोह युग की अज्ञानांधकार रूपी रात्रि में *दुःखमय विकारी भ्रष्टाचारी हिंसक दुनिया* का अंत कर नये स्वर्णिम युग जिसका वर्णन रामराज्य स्वर्ग हेवन बहिश्त इत्यादि नामों से शास्त्रों व अनेक धार्मिक ग्रंथो में उपलब्ध है स्थापन करने हेतु सारे जहाँन का नूर ज्ञानसूर्य इस धरा पर आ चुके हैं जिससे यह धरा पुनः सशक्त पावन बन निवास लायक सुंदर स्थान बन जाए । चूंकि परमात्मा एक है इसलिए वे एकधर्म व एक वैश्विक परिवार की स्थापना करते हैं ।

यह वही निराकार भगवान है जिनके महावाक्य भारत के पवित्र सनातन ग्रंथ गीता में वर्णित है " यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत.....तदात्मानं सृजाम्यहम.....संभवामि युगे युगे। अर्थात भारत में अति धर्म ग्लानि के समय जब अनैतिकता अत्याचार भ्रष्टाचार पापाचार अपनी चरम सीमा पर होते हैं तभी मैं एक साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर एक सतधर्म वाला श्रेष्ठाचारी दुनिया की स्थापना ईश्वरीय ज्ञान व सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा करता हूँ जिससे एक नये युग की शुरूआत होती है । वर्तमान समय हम हर तरह के दुःख, *भ्रष्टाचार, पाप कर्म, हिंसक प्रवृत्तियों* के साक्षी एवं अनुभवी हैं इससे सिद्ध है कि दुनिया आज अंतिम चरण में पहुँच चुका है जैसे कि वर्णित है।

परमात्मा द्वारा विश्व परिवर्तन के कार्य को साकार में लाने के लिए हम पार्टधारी परमात्मा की संतान आत्माओं को सबसे पहले अपने पिता परमात्मा को पहचानना होगा जो स्वर्ग हेवन बहिश्त जन्नत का रचयिता है व जिन्हें शिव, अल्लाह, खुदा, जेवोहा, ओंकार, वाहेगुरू इत्यादि अनंत नामों से विभिन्न धर्मों तथा पंथों में जानते तो हैं परंतु सच्चा परिचय तो वे स्वंय ही कल्प के अंत में आकर देते हैं । दूसरा उनके श्रीमत अथवा मार्गदर्शन अनुसार अपनी आत्मा को पवित्र बनाकर आसुरी अवगुणों याने हिंसक विकारी स्वभाव को परिवर्तन करना होगा जिसके कारण हम देवता पद से नीचे गिरे और यह सुंदर धरा स्वर्ग से नरक में तबदील हो गया । परमात्मा हमारा रचयिता है बाकी सभी उसकी रचनायें हैं परंतु हम आत्माओं का पिता और बच्चे का अनादि संबंध है।

अभी परमात्मा पिता कहते हैं " देह सहित देह के सभी संबंधो का भूल अपने को चेतन ज्यार्तिबिन्दु आत्मा समझ मुझ निराकार ज्यार्तिबिन्दु परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे पाप कर्म नष्ट हो जायेंगे व तुम अपना

स्वर्गीय राज्य भाग्य का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त कर मेरे साथ अपने वास्तविक घर परमधाम वा मुक्तिधाम चलेंगे।

वर्तमान समय हम विश्व परिवर्तन की चरम सीमा पर खड़े हैं और कुछ ही समय शेष बचे हैं जिसमें हमें स्वपरिवर्तन कर भविष्य में आने वाली नई स्वर्गीय दुनिया में पवित्रता, सुख, शांति का अपना जन्मसिद्ध अधिकार परमात्म पिता से प्राप्त कर सकते हैं । ध्यान रहे एक बार मौका खोना माना सदा के लिए खो देना । अभी नहीं तो कभी नहीं । जागो जागो अधिक देरी होने से पहले फिर यह उल्हना न देना कि भाग्य विधाता भगवान भाग्य बॉटने आये और हमें संदेश का पता ही नही चला ।

परमात्म पिता को हार्दिक अर्पण

ईश्वरीय सेवा में...